

बात खूब सरत लगी। थके हुए दिन के ये पहले सुबह क्षण थे। तो आज भी दिल्ली में कविता लिखना संभव है, इस बुलन्द शहर में जहां 'भीर' और 'भजाऊ' को चैन न मिला। आज भी क्या यह हो सकता है कि एक भारतीय पेरिस आकर बच्चों को बाग में सैर कराने के लिये समय निकाल सके। मैंने सोचा कि ऐसे शुद्ध और प्रारंभिक विचार तो एक कवि के मन में ही आ सकते हैं। अधिकतर दशक यहाँ आकर लुव्र, ओपेरा या नाइट क्लब में ही व्यस्त रहते हैं। बच्चों या फूलों के लिये यहाँ किस समय है।

काला बिगड़ा हुआ चित्र मुझे देख रहा था, मानों कह रहा हो : "संधर्ष छोड़ दिया।" नहीं, संधर्ष छोड़ना मैं नहीं जानता। कल्पन से ही सुभाव, साधन, मार्ग मिले हैं : आग्रह, रुकावट, भक्ति, कार्य-संकल्प और प्रार्थना। दमोदर के स्नेहमय गीत आज भी याद हैं, "ज्यों ज्यों डूबत श्याम में, त्यों त्यों उज्जवल होव।" हाँ, यही होगा, मुझे मालूम है, मैं उपस्थित हूँ, डूबना है, इन्हीं अव्यारख्येय शक्तियों में, इन्हीं में जीवन है, इन्हीं में मोक्ष।

समय था प्रार्थना का। अनुभव मार्ग दिखाता है। एक मजदूर की तरह दैनिक कार्य से समझ मिलती है। चित्र जल्दी में नहीं बनते हैं। धैर्य और प्रतीक्षा आवश्यक है। अनकुल क्षण, सहज, जन्मगत वातावरण, अन्तर्बोध केवल श्रम से नहीं मिलते हैं। सृष्टि-विधि ही सर्वश्रेष्ठ है। रचनात्मक क्रियाओं में दिव्य उत्कृष्ट और शक्ति शाली आन्तरिक प्रेरणाएँ सक्रिय हैं। इस विराट ब्रह्माण्ड में बुद्धि, तर्क - तुच्छ है। मंसा प्रत्यक्षता परम बोध है। कार्य आधार है। विचार शक्ति मानव जाति की विशेषता अवश्य है, हमारा वहमूल्य साधन है, पर हमें समझना है कि और भी शक्तियाँ सहायक हैं जिनका अभी हमें पूरा ज्ञान नहीं। जीवन में, या चित्र रचना में हम सोचना तो कभी बन्द नहीं करते, किन्तु यह प्रक्रिया तभी अधिक सफल लगती है, जब चित्र नहीं बनते हैं, या जब हम दूसरे चित्रकारों की कृतियाँ देखते हैं और उन्हें समझना चाहते हैं।

सोचते सोचते, मैंने सोचा कि शब्दों का संसार तो और भी कठनाइयों से भरा होगा। कविता को हम न देख सकते हैं, न छू सकते हैं। फिर भी